A–1038

Total Pages : 4 **Roll No. .....**

BASL(N)-102

संस्कृत गद्यकाव्य एवं उपन्यास

Examination, June 2025

Time : 2:00 Hrs. Max. Marks : 70

नोट : यह प्रश्न-पत्र सत्तर (70) अंकों का है, जो दो (02) खण्डों 'क' तथा 'ख' में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड में दिए गए विस्तृत निर्देशों के अनुसार ही प्रश्नों को हल करना है। ***परीक्षार्थी अपने प्रश्नों के उत्तर दी गई उत्तर-पुस्तिका तक ही सीमित रखें। कोई अतिरिक्त (बी) उत्तर-पुस्तिका जारी नहीं की जायेगी।***

खण्ड–क

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न 2×19=38

नोट : खण्ड 'क' में पाँच (05) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न दिये गये हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए उन्नीस (19) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल **दो** (02) प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

1. शिवराजविजय के प्रथम नि:श्वास का सारांश लिखिए।
2. पण्डित अम्बिकादत्त व्यास का जीवन परिचय लिखिए।
3. हितोपदेश के सामाजिक महत्त्व पर प्रकाश डालिए।

4. पञ्चतन्त्र के वैशिष्ट्य पर प्रकाश डालिए।

5. निम्नलिखित की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए–

यौवनारम्भे च प्राय: शास्त्रजलप्रक्षालननिर्म्मलापि कालुष्य–मुपयाति बुद्धि:। अनुज्झितधवलतापि सरागेव भवति यूनां दृष्टि:। अपहरति च वात्येव शुष्कपत्रं समुद्धूतरजोभ्रान्तिरतिदूरमात्मेच्छया यौवनसमये पुरुषं प्रकृति:। इन्द्रियहरिण–हारिणी च सततदुरन्तेयमुपभोगमृगतृष्णिका। नवयौवनकषायितात्मनश्च सलिलानीव तान्येव विषयस्वरूपाण्यास्वाद्यमानानि मधुरतराण्यापतन्ति मनस:। नाशयति च दिङ्मोह इवोन्मार्गप्रवर्त्तक: पुरुषमत्यासङ्गो विषयेषु। भवादृशा एवं भवन्ति भाजनान्युपदेशानाम् ! अपगतमले हि मनसि स्फटिकमणाविव रजनिकरगभस्तयो विशन्ति सुखेनोपदेशगुणा:। गुरुवचनममलमपि सलिलमिव महदुपजनयति श्रवणस्थितं शूलमभव्यस्य। इतरस्य तु करिण इव शङ्खाभरणमाननशोभास मुदयमधिकतरमुपजनयति।

अथवा

अपरे तु त्वार्थनिष्पादनपरैर्धन–पिशित–ग्रास–गृधे रास्थाननलिनीबकै:, द्यूतं विनोद–इति, परदाराभिगमनं वैदग्ध्यमिति, मृगया श्रम इति, पानं विलास इति, प्रमत्तता शौर्य्यमिति, स्वदारपरित्यागोऽतव्यसनितेति, गुरुवचनावधीरणमपरप्रणेयत्वमिति, अजितभृत्यता सुखोपसेव्यत्वमिति, नृत्यगीतवाद्यवेश्याभिसक्ती रसिकतेति, महापराधाकर्णनं महानुभावतेति, पराभवसहत्वं क्षमेति, स्वच्छन्दता प्रभुत्वमिति, देवावमाननं महासत्त्वतेति, बन्दिजनस्यातिर्यश इति, तरलता उत्साह इति, अविशेषज्ञता अपक्षपातित्वमिति दोषानपि गुणपक्षमध्यारोपयद्भिरन्त: स्वयमपि विहद्भि:

प्रतारणकुशलैर्भूत रमानुषलोकोचिताभिः स्तुतिभिः प्रतार्य्यमाणा वित्तमदमत्तचित्ता निश्चेतनतया तथैवेत्यात्मन्यारोपितालीकाभिमाना मर्त्यधर्माणोऽपि दिव्यांशावतीर्णमिव सदैवतमिवातिमानुषमात्मानमुत्प्रेक्षमाणाः प्रारब्ध-दिव्योचितचेष्टानुभावाः सर्वजनस्योपहास्यतामुपयान्ति।

खण्ड–ख

लघु उत्तरीय प्रश्न 4×8=32

नोट : खण्ड 'ख' में आठ (08) लघु उत्तरीय प्रश्न दिये गये हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए आठ (08) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल **चार** (04) प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

1. विष्णोर्माया भगवती यया-इस श्लोक को पूरित करते हुए व्याख्या कीजिए।
2. "गद्यं कवीनां निकषां वदन्ति" इस पर टिप्पणी कीजिए।।
3. सिंहासनद्वात्रिंशिका का ऐतिहासिक महत्त्व पर टिप्पणी कीजिए।
4. कादम्बरी के अनुसार शुकनास का वर्णन कीजिए।
5. गद्य काव्य परम्परा में आचार्य बाणभट्ट के योगदान पर प्रकाश डालिए।
6. अल भो अलम् मयैव पूर्वमवचितानि कुसुमानि, त्वं तु चिर रात्रावजागरीरिति क्षिप्र नोत्थापित, गुरुचरणा अत्र तडागतटे सन्ध्यामुपासते, संस्थापिता मया निखिला सामग्री तेषा समीपे। या च

सप्तवर्षकल्पाम्, यावनत्रासेन निःशब्द रुदतीम् परमसुन्दरीम्, कलितमानव-देहामिव सरस्वती सान्त्वयन्, मरन्दमधुरा अप पाययन्, कन्दखण्डानि भोजयन्, त्व त्रियामाया यामत्रयमनैषी, सेयमधुना स्वपिति, उद्बुद्धय च पुनस्तथैव रोदिष्यति, तत्परिमार्गणीयान्येतस्या पितरौ गृहं च-इति सश्रुत्य उष्णं निःश्वस्य यावत् सोऽपि किञ्चद्वक्तुमियेष तावदकस्मात् पर्वतशिखरे निपतात उभयोर्दृष्टि। —इस गद्यांश की व्याख्या कीजिए।

7. तदाकर्ण्य कोपज्वालाज्वलित इव योगी प्रोवाच—"विक्रमराज्येऽपि कथमेष पातकमयो दुराचारणामुपद्रवः ?" तत स उवाच-महात्मन्। क्वाधुना विक्रमराज्यम् ? वीरविक्रमस्य तु भारतभुव विरहय्य गतस्य वर्षाणां सप्तदशशतकानि व्यत्तीतानि। क्वाधुना मन्दिरे-मन्दिरे जय-जय ध्वनिः ? क्व सम्प्रति तीर्थे तीर्थे घण्टानादः ? क्वाद्याति मठे-मठे वेदघोषः ? अद्य हि वेदा विच्छिद्य वीथीषु विक्षिप्यन्ते, धर्मशास्त्राण्युद्धय घूमध्वजेषु ध्मायन्ते, पुराणानि पिष्ट्वा पानीयेषु पात्यन्ते, भाष्याणि भ्रंशयित्वा भ्राष्ट्रेषु भ्रज्यन्ते, "क्वचिन्मन्दराणि भिद्यन्ते क्वचित्तुलसीवनानि छिद्यन्ते, क्वचिद्वारा अपह्रियन्ते, क्वचिद्धनानि लुण्ठ्यन्ते, क्वचिदार्तनादाः, क्वचिदरुधिरधारा, क्वचिग्निदाहः, गृहनिपातः" इत्येव श्रूयतेऽवलोक्यते च परितः। —इस गद्यांश की व्याख्या कीजिए।

8. संस्कृत के प्रमुख गद्यकारों में किसी एक का परिचय दीजिए।

****